खेलगांव के डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन में आईआईएम का 11वां स्थापना दिवस मनाया गया, प्रबंधन विशेषज्ञों ने रखे विचार

विषय में विशेषज्ञता है तो अवसरों की कमी नहीं

वार्षिकोत्सव

रांची | प्रमुख संवाददाता

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) रांची ने अपनी स्थापना के 11 वर्ष पूरे कर लिए हैं। रविवार को खेलगांव स्थित डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन में स्थापना दिवस समारोह मनाया गया। इस मौके पर मुख्य अतिथि शंकर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के निदेशक प्रवीण शंकर पांड्या ने प्रबंधन के क्षेत्र में संभावनाओं पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि विषय कोई भी हो, उस क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने से अवसरों की कभी कोई कमी नहीं होगी।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ शैलेंद्र सिंह ने संस्थान को ऊंचाई तक पहुंचाने में शिक्षकों और विद्यार्थियों के योगदान की सराहना की। उन्होंने आईआईएम रांची की 10 साल की यात्रा को लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने छात्रों को कड़ी मेहनत करने और शोध के लिए प्रेरित किया।

बता दें कि प्रबंधन संस्थानों की नौवीं इकाई के रूप में आईआईएम रांची की शुरुआत 15 दिसंबर 2009 को हुई थी। संस्थान को आईआईएम अधिनियम 2017 के तहत राष्ट्रीय महत्व के संस्थान का दर्जा दिया गया है। समारोह में लार्सन एंड टुब्रो में एसवीपी और हेड-इलेक्ट्रिकल और ऑटोमेशन हसित जोशपुरिया, जीसी ग्रुप ऑफ कंपनीज के चेयरमैन संजय सिन्हा, सनोफी इंडिया में पूर्व एमडी डॉ शैलेश अय्यंगार मौजूद थे। डॉ शैलेश अयंगार ने युवाओं को नई सोच के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि हमेशा असफलता के बाद उठने और चुनौतियों को पार पाने का साहस रखें। विफलता से उबरना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन खेलगांव में आयोजित आईआईएम के स्थापना दिवस समारोह में अतिथियों के साथ संस्थान के निदेशक और नृत्य करती एक छात्रा। • हिन्दुस्तान

निदेशक बोले

- संस्थान को ऊंचाई तक पहुंचाने में शिक्षक और विद्यार्थियों का योगदान सराहनीय
- छात्रों को कड़ी मेहनत करने के साथ-साथ शोध कार्य करने के लिए भी प्रेरित किया

संगीत-नृत्य से बांधा समा

स्थापना दिवस का उल्लास विद्यार्थियों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में नजर आया। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने गीत-नृत्य और नाटक के माध्यम से अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। बॉलीवुड और शास्त्रीय संगीत की स्वरलहरियों में श्रोता खोए रहे। शैक्षणिक उत्कृष्टता, कॉरपोरेट प्रतियोगिता और विभिन्न पाठ्येत्तर गतिविधियों में अच्छा प्रदर्शन करनेवाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

लैंगिक समानता पर स्किट की प्रस्तुति

लैंगिक समानता पर आधारित स्किट भी प्रस्तुत किया गया। इसके जरिए संदेश दिया गया कि दुनिया बदल गई है इसलिए लैंगिक भूमिकाओं में अंतर है। हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहां एक पिता घर में मां की भूमिका को कुशलता से निभा सकता है और एक बेटी एक बेटे के रूप में जिम्मेदारी उठा सकती है। लड़कियां मार्शल आर्ट सीखकर समाज में अपराधों से लड़ सकती है।

Hindustan, 16.12.2019, Pg. 02 (Supl.)